SMT. ANUPAMA HOSKERE

Smt. Anupama Hoskere is a master puppeteer and the Founder-Director of the Dhaatu Puppet Theater, Bengaluru, India. She is globally recognized for her wide experience in every facet of the composite art form of puppetry.

2. Born on 20th December, 1964 in Bengaluru, Smt. Anupama started getting training in Carnatic music and Bharatanatyam even before starting formal schooling. Along with formal education, she received lessons in the great Indian Epics of Ramayana and Mahabharata. She received her Bachelor in Engineering degree from BMS College of Engineering in 1987 and Master of Science degree from California State University, Long Beach in 1993. She also received training in traditional puppetry of Karnataka.

3. Along with her husband, Sri Vidyashankar Hoskere, Smt. Anupama founded Dhaatu in 2004 with the aim of bringing to the people India's great Treasure Trove of stories from historical epics like the Ramayana and the Mahabharata, from literary masterpieces of poetic greats such as Bhasa and Kalidasa as well as stories from the Panchatantra and the many stories of India's great sages, kings and thinkers. A careful and detailed study of the Natyashastra provided her much impetus to expand the intricacies and intellectual merit of her productions. She has redesigned the old puppet theater into a more composite layered theater - combining puppetry, dance, and theatre into large-scale performances. Dhaatu has, over time, developed to become India's first puppetry brand name that catapulted puppetry into being recognized as a respected and classical art form of India. With over 25 full-length productions, the Dhaatu Puppet Theater has been invited to perform at prestigious International Festivals in France, Belgium, Morocco, USA, China, etc., apart from several platforms within India.

4. Smt. Anupama decided to take traditional puppetry to the masses and thus began the Dhaatu International Puppet Festival. This annual festival of puppet shows, workshops and conferences provides a platform for urban and rural puppeteers of India to come together along with puppeteers from foreign countries. The proceedings of the conference are brought out in a publication called “Punaschetana”, recording the knowledge systems and history of Indian puppetry and that of visiting artistes and scholars. She also initiated the Dhaatu Navaratra Mahotsava in 1995. Through a still-theatre display of individually detailed story boxes consisting of well over ten thousand traditional dolls, stories of Ramayana, Mahabharata, Bhagavata, Shiva Purana and temple traditions of India are told during the Dussehra festival. She continues her endeavours with Dhaatu Puppet Paathashala, training students in puppetry. She has established the Dhaatu Puppet Museum in Bengaluru that has a curated collection of unique puppets from different states of India and across the world.

5. Smt. Anupama is a recipient of the Central Sangeet Natak Akademi Puraskar [2018] for puppetry and numerous other awards by cultural organizations in India and abroad. She has been a recipient of the Senior fellowship in Puppetry awarded by the Ministry of Culture. She is also the recipient of the UN Erasmus Mundus Scholarship to teach Indian puppetry across universities in Europe.

श्रीमती अनुपमा होस्केरे

श्रीमती अनुपमा होस्केरे एक निष्णात कठपुतली कलाकार और धातु पपेट थिएटर, बेंगलुरु, भारत की संस्थापक–निदेशक हैं। वह कठपुतली कला के हर पहलू में अपने व्यापक अनुभव के लिए दुनिया भर में जानी जाती हैं।

2. 20 दिसंबर, 1964 को बेंगलुरु में जन्मी, श्रीमती अनुपमा ने औपचारिक स्कूली शिक्षा शुरू होने से पहले ही कर्नाटक संगीत और भरतनाट्यम का प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया था। औपचारिक शिक्षा के साथ–साथ, उन्होंने रामायण और महाभारत के महान भारतीय ग्रंथों की शिक्षा भी प्राप्त की। उन्होंने 1987 में बीएमएस कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग से इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री और 1993 में कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी, लॉन्ग बीच से मास्टर ऑफ साइंस की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने कर्नाटक की पारंपरिक कठपुतली कला का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया।

3. अपने पति, श्री विद्याशंकर होस्केरे के साथ मिलकर श्रीमती अनुपमा ने 2004 में धातु की स्थापना की, जिसका उद्देश्य भारत के रामायण और महाभारत जैसे पौराणिक महाकाव्यों की कहानियों, भास और कालिदास जैसे महान कवियों की उत्कृष्ट साहित्यिक कृतियों के साथ–साथ पंचतंत्र और भारत के महान संतों, राजाओं तथा मनीषियों की कहानियों के खजाने को लोगों तक पहुंचाना था। नाट्यशास्त्र के गहन और विस्तृत अध्ययन ने अनुपमा को अपनी प्रस्तुतियों की बारीकियों और बौद्धिक प्रतिभा का विस्तार करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कठपुतली कला, नृत्य और थिएटर को बड़े स्तर की प्रस्तुतियों में संयोजित करते हुए पुराने कठपुतली थिएटर को अधिक समग्र और बहुस्तरीय थिएटर बना दिया है। समय के साथ धातु, भारत का पहला पपेटरी ब्रांड नाम बन गया, जिसने कठपुतली कला को भारत के एक सम्मानित और शासकीय कला रूप के तौर पर सम्मान दिलाया। 25 पूर्ण प्रस्तुतियों के साथ, धातु पपेट थिएटर को भारत के कई मंचों के अलावा फ्रांस, बेल्जियम, मोरक्को, अमेरिका, चीन आदि में प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय समारोहों में प्रस्तुति देने के लिए आमंत्रित किया गया है, जहां अनुपमा होस्केरे की प्रतिभा को उचित सम्मान मिला है।

4. श्रीमती अनुपमा ने पारंपरिक कठपुतली कला को जन–जन तक पहुंचाने का संकल्प किया और इस तरह धातु अंतरराष्ट्रीय कठपुतली महोत्सव की शुरुआत हुई। पपेट शो, कार्यशालाओं और सम्मेलनों का यह वार्षिक उत्सव भारत के शहरी और ग्रामीण कठपुतली कलाकारों को विदेशी कठपुतली कलाकारों के साथ आने का एक मंच प्रदान करता है। सम्मेलन की कार्यवाही को "पुनश्चेतन" नाम की एक पत्रिका में प्रकाशित किया जाता है, जिसमें भारतीय कठपुतली कला और आमंत्रित कलाकारों तथा विद्वानों के ज्ञान और इतिहास को दर्ज किया जाता है। उन्होंने 1995 में धातु नवरात्र महोत्सव की भी शुरुआत की। हर वर्ष दशहरा उत्सव के दौरान दस हजार से अधिक पारंपरिक गुड़ियों से युक्त अलग–अलग बारीकियों से तैयार किए गए स्टोरी बॉक्स के स्टिल–थिएटर प्रदर्शन के जरिये, रामायण, महाभारत, भागवत, शिव पुराण और भारत की मंदिर परंपराओं की कहानियां सुनाई जाती हैं। वह धातु कठपुतली पाठशाला के जरिए विद्यार्थियों को कठपुतली कला का प्रशिक्षण देती हैं। उन्होंने बेंगलुरु में धातु पपेट म्यूजियम की स्थापना की है जिसमें भारत के विभिन्न राज्यों और दुनिया भर की अनूठी कठपुतलियों का संग्रह है।

5. श्रीमती अनुपमा को देश–विदेश में सांस्कृतिक संगठनों से कठपुतली कला के लिए केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (2018) और कई अन्य पुरस्कार मिल चुके हैं। उन्हें संस्कृति मंत्रालय द्वारा कठपुतली कला में सीनियर फेलोशिप मिल चुका है। उन्हें यूरोप के विश्वविद्यालयों में भारतीय कठपुतली कला सिखाने के लिए संयुक्त राष्ट्र इरास्मस मुंडस स्कॉलरशिप भी मिल चुकी है।